नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

शिकागो संभाषण की 125वीं जयंती पर प्रो. राम मोहन पाठक का व्याख्यान
विविकानंद ने शिकागो सम्मेलन में सहिष्णुता, संस्कृति का पक्ष रखा

वर्धा, 12 सितंबर 2018: स्वामी विवेकानंद ने शिकागो सम्मेलन में अपने ओजस्वी और प्रभावी संभाषण से भारतीय सहिष्णुता और संस्कृति का पक्ष दुनिया के समक्ष रखा था। भारतीय चिंतन और संस्कृति परंपरा में विवेकानंद का महति योगदान है। वे मानव के समग्र कल्याण की दृष्टि देने वाले व्यक्ति थे। वें अदभूत संचारक थे । उनका संदेश दुनिया ने आत्मसात किया है। उनके संचार में प्रमाण और प्रामाणिकता है जो विचार की स्विकार्यता बढ़ाती है।

उक्त विचार स्वामी विवेकानंद के शिकागो संभाषण की 125 वीं जयंती के उपलक्ष्य में मंगलवार, 11 सितंबर को आयोजित विशेष व्याख्यान में काशी विद्यापीठ वाराणसी के प्रो. राम मोहन पाठक ने व्यक्त किये। प्रो. पाठक ने 'विवेकानंद विचार एवं संचार' विषय पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के गालिब सभागार में व्याख्यान दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। इस अवसर पर महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी समाज कार्य अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. मनोज कुमार मंचासीन थे।

प्रो. पाठक को भारत सरकार ने स्वामी विवेकानंद की जीवन दृष्टि को प्रचारित करने के लिए एक योजना के अंतर्गत दूत नियुक्त किया है। इस योजना के तहत वें अलग-अलग विश्वविद्यालयों और स्थानों पर जाकर व्याख्यान देंगे। अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद शिकागो सम्मेलन में महाबोधी सोसायटी के अनागरिक धर्मपाल के साथ गये थे। 17 दिन तक चले सम्मेलन में उन्होंने छह बार अपने वक्तव्य दुनिया के

प्रभावित करने वाले थे और उसमें कल्याणकारी संचार था। प्रो. पाठक ने विवेकानंद के जीवन से जुड़े अनेक

संस्मरण सुनाएं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि विवेकानंद का नाम की स्फूर्ति का संचार करता है। जब संचार के आधुनिक साधन नहीं थे तब उन्होंने दुनिया को अपने ओजस्वी वक्तव्य से संबोधित किया था। उनको रामकृष्ण परमहंस जैसे योद्धा परिव्राजक गुरु के रूप में मिले। उनकी दृष्टि व्यापक और आभामण्डल अदभूत था। उनके विचार आज भी प्रासंगिक है।

कार्यक्रम में प्रो. मनोज कुमार ने प्रस्तावना रखी। उन्होंने युवाओं को विविकानंद का परिचय कराने के लिए यह आयोजन किया गया और विवेकानंद के विचारों के विद्वान प्रो. पाठक को निमंत्रित किया गया। युवा पीढी के व्यक्तित्व विकास के लिए इस प्रकार के व्याख्यान फलदायी सिद्ध होंगे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मिथिलेश कुमार ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन जनसंचार विभाग के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार राय ने किया। इस अवसर पर अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।